शब्द–ब्रह्म
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका
E ISSN 2320 – 0871
17 नवम्बर 2016
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

मैत्रेयी पुष्पा के उपन्यास में नारी जाग्रति

श्रीमती पूनम आर्या
डी.एस.बी. परिसर
नैनीताल, उत्तराखंड, भारत

शोध संक्षेप

किसी समाज के उत्थान और पतन का विश्लेषण उस समाज में नारी की स्थिति से किया जाता है। स्त्री शक्ति की प्रगतिशीलता पर समाज का विकास अवलम्बित है। साहित्यकारों ने महिलाओं को नाना रूपों में चित्रित किया है। वेद-पुराण, उपनिषद ग्रंथों में स्त्री को पूजनीय माना है। वेदों में 21 महिलाओं की नाम आते हैं, जिन्होंने वैदिक ऋचा की रचना की है। कालान्तर में महिलाओं के साथ दोयम दर्जे का व्यवहार होने लगा। उनकी निरंतर उपेक्षा की जाती रही। उसे केवल भोग की वस्तु माना जाने लगा। भारत में जब पुनर्जागरणकाल प्रारंभ हुआ, तब महिला की दयनीय स्थिति की ओर ध्यान गया और सुधार कार्य प्रारंभ हुए। अनेक महिलाओं ने जागृत होकर अपने पर होने वाले अत्याचारों के खिलाफ आवां बुलंद की और स्त्री में आत्मविश्वास बढाया। महिला साहित्यकारों में मैत्रेयी पुष्पा का नाम बड़े आदर से लिया जाता है। उनके साहित्य में स्त्री के अनेक रूप चित्रित हुए हैं। प्रस्तुत शोध पत्र में मैत्रेयी पुष्पा के उपन्यासों में नारी जागृति के विभिन्न रूपों पर विचार किया गया है।

मुख्य शब्द: *नारी जागृति, सृष्टि की सर्जक, पितृसत्तात्मक समाज*

प्रस्तावना

सुप्रसिद्ध लेखिका मैत्रेयी पुष्पा का जन्म एक साधारण परिवार में 30 नवंबर 1944 को उत्तरप्रदेश के अलीगढ़ जिले में सिकुर्रा नामक गांव में हुआ। उनका बचपन झांसी जिले के खिल्ली नामक गांव में बीता। इनकी प्रारंभिक शिक्षा स्थानीय पाठशाला में हुई। इन्होंने बुंदेलखंड कॉलेज झांसी से एम.ए. हिन्दी की परीक्षा उत्तीर्ण की। गृहस्थ जीवन का पालन करते हुए साहित्यिक क्षेत्र में भी दखल बनाये रखा।

भारतीय समाज में नारी के अनेक रूप देखने को मिलते हैं। सबसे पहले मां, बेटी, फिर बहन, प्रेमिका, पत्नी, भाभी सास आदि। इन सभी रूपों में वह अपने कर्तव्य का पालन बखूबी करती है। वह कहीं आदर्श बेटी है, कहीं आदर्श पत्नी और भिन्न-भिन्न आदर्श रूपों में दिखाई देती है। इतना ही नहीं नारी तो सृष्टि की सर्जक है। वास्तव में नारी ईश्वर की सर्वोत्तम कृति है। लेकिन इन सबके बावजूद नारी को प्रताड़ित किया जाता है, उसे डराया-धमकाया जाता है, क्योंकि हमारा समाज पुरुष प्रधान समाज है। अतः नारी के उत्पीड़न को मैत्रेयी पुष्पा ने स्वर दिया है।

मैत्रेयी पुष्पा के उपन्यासों में नारी जाग्रति

मैत्रेयी पुष्पा ने अपनी रचनाओं में अलीगढ़, बुंदेलखंड और दिल्ली के जनजीवन को बड़ी मार्मिकता के साथ चित्रित किया है। उन्होंने अपने कथा साहित्य में नारी से संबंधित कुछ मूलभूत अंशों, बदलते परिवेश, बदलती स्त्री और बदलते मानदण्डों द्वारा नारी अस्मिता को रेखांकित किया है। मैत्रेयी पुष्पा का लेखन स्त्री को अपने पक्ष में खुद लड़ना और खुद ही खड़े होना सिखाता है। उनके कथा साहित्य में नारी पात्रों में स्वतंत्रता की तड़प और संघर्ष तथाकथित

शब्द–ब्रह्म
E ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका
17 नवम्बर 2016
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

सभ्य शिक्षित महानगरीय महिला वर्ग से उत्पन्न होकर ग्रामीण समाज के यथार्थ की देन है।

'चाक' में लेखिका ने अपनी नायिका सारंग की विधवा बहन रेशम के द्वारा मौत के घाट उतारे जाने की कथा का वृत्तांत काफी मार्मिकता से उजागर किया है। वह इस पितृसत्तात्मक व्यवस्था पर गहरा व्यंग्य करती है, जो नारी को जीने के अधिकार से भी वंचित कर देती है। लेकिन हैरानी की बात यह है कि गांव की स्त्रियां रेशम की हत्या पर कोई प्रश्न नहीं उठाती, बल्कि इसी व्यवस्था में जिऐ जाने के लिए मजबूर है। इस संबंध में मैत्रेयी पुष्पा लिखती हैं, "इस गांव में दर्ज दास्तान बोलती है - रस्सी के फंदे पर झूलती रूक्मणी कुएं में कूदने वाली रामदेई करनन नदी में समाधिस्थ नारायणी - ये बेबस औरतें सीता मइया की तरह भूमि प्रवेश कर अपने शील सतीत्व की खातिर कुरबान हो गईं। ये ही नहीं और न जाने कितनी।"1 दरअसल पुरुष सत्ता स्त्री के लिए यौन शुचिता को अनिवार्य मानती है। यही कारण है कि इस संहिता का उल्लंघन करने वाली नारियों को इनका शत्रु माना जाता है, किंतु लेखिका की मान्यतानुसार पुरुषवादी समाज का यह मापदंड दोहरा है, क्योंकि खुद तो पुरुष अपनी मनमर्जी के अनुसार किसी भी स्त्री से संबंध बनाता है, परंतु विधवा स्त्री द्वारा अपने देह धर्म स्वीकार किए जाने पर उसे मृत्यु दण्ड देता है। पितृसत्तात्मक व्यवस्था के इन संस्कारों में जकड़ी नारी की नियति यही है। लेकिन मैत्रेयी की सारंग न केवल इन संस्कारों को ठुकराती है, बल्कि पुरुषवादी समाज के बड़े कानून यौन शुचिता के प्रति विद्रोह करती हुई श्रीधर से शारीरिक संबंध स्थापित कर उसे अपने कार्य के लिए प्रवृत्त करती है और स्वयं रेशम के लिए खड़ी होकर विरोध का सामना करती है। धीरे-धीरे तमाम दमित, प्रताड़ित और शोषित स्त्रियां सारंग के साथ हो लेती हैं, जो नारी जाग्रति का परिचायक है। सारंग अपने तेवर और आक्रामकता से दारोगा को भी पछाड़ देती है। गांव के लोग उससे इस रूप को देखकर दंग रह जाते हैं। "चनवा की माई माननी होगा भाई। बड़ी मजबूत कलेजे वाली औरत है। दारोगा से बोलते हुए तनिक भी दब नहीं रही है।...भीड़ सकते में थी। पीछे खड़ी औरतें एक-दूसरे का मुंह देखने लगीं। मुखिया का तो भक मान गया था। सरजू के गर्दन झुक गई थीं नरेश तिवारी मुंह में ही न जाने क्या बुदबुदाता, बुरी तरह कसकसा रहा था।"2 और अंत में सारंग रेशम के हत्यारे को हथकड़ी लगाकर ही रहती है। और शोषक पुरुषों को सजा दिलवाने में पीछे नहीं हटती। सारंग का विद्रोह यौन नैतिकता के दोहरे मानदंड से है। पुरुषों के द्वेषों से है। पति द्वारा मिलने वाली प्रताड़ना, उपेक्षा अपमान से है। सामाजिक विसंगति से है। स्त्री जाग्रति का परिचय स्थन-स्थान पर सारंग के व्यवहार में मिलता है।

'झूलानट' उपन्यास ग्रामीण परिवेश से संबंधित है। 'झूलानट' की पृष्ठभूमि बुंदेली ग्रामीण किसान परिवार की है। इस उपन्यास में जाग्रत स्त्री शीलो का उल्लेख किया जा सकता है। शीलो पढ़ी-लिखी नहीं, शीलो खूबसूरत न होने के कारण पति की उपेक्षा का कारण बन जाती है। प्रगतिशील विचारों वाली शीलो को उसका पति सुमेर त्याग देता है। इसके बाद वह देवर से संबंध बनाती है। सास दोनों का विवाह करना चाहती है। इस पर शीलो मना करती है। कहती है हमारा मन का ब्याह हुआ है। इसमें बछिया का क्या काम, दूसरा विवाह करने से क्या होगा। सामाजिक व्यवस्था के अनुसार ब्याह करने पर

शब्द–ब्रह्म
E ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका 17 नवम्बर 2016
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

पूरे रीति-रिवाज से बंधन में बंधने पर क्या हुआ, पति छोड़ कर चला गया। गांव, जाति, बिरादरी, आस-पड़ोस सब कहते हैं बछिया (बछिया यानी बछिया दान का दोबारा विवाह करना) करने को कहते हैं। शीलो किसी की बात नहीं सनुती, उसे किसी गांव, जाति-बिरादरी की परवाह नहीं है। वह सभी का डटकर सामना करती है। गांव की काकी जब उसे शादी करने का सुझाव देती है, तब शीलो उसे आड़े हाथों लेती है। "ऐ काकी जी, पुलिसिया बेटा की बछिया की पांत खाली, पूछा नहीं कि बरकट्टो (बाल कटी) ब्याही है या रखैल ? बेटों के चलते रसम-रीति भूलकर बहुओं की पीड़ा के लिए कोड़े लिए फिरती हो तुम बूढ़ी जनी।"3 अब तक शीलो ने बहुत दुत्कार सही थी - रखैल, रंडी, चुड़ैल, राक्षसी बदकार इन सबसे शीलो को कोई फर्क नहीं पड़ता। उसे सौ भद्दी गालियां अब कमजोर नहीं बना सकती हैं। सुमेर धोखे से जीमन हड़पने के बहाने शीलों को मीठी बातों में फंसाना चाहता है। वह कहता है सच्ची बात तो यह कि घर वसीले के लिए जमीन बेचना तो बहाना है, मैं तुम्हारी राह का कांटा बनना नहीं चाहता। तुमने जो किया, बुद्धि विचार से किया। अक्लमंद कमद। इस पर "शीलो सुमेर को जवाब देती है, "बालकिशन से हमारा क्या नाता...? इस नाते को बड़ा मानते हो तुम....काये के पति - पत्नी, बाबूजी ? वह अबोध मन का अच्छा है, सो बस तुम्हारी ब्याहता होने के बाद भी...पर छोड़ो उस बात को। बालकिशन तो ऐसे ही हैं हमारे लिए, जैसे तुम्हारे लिए तुम्हारी दूसरी औरत। बिन ब्याही, मनमर्जी की। सच मानो, बालू भी इससे ज्यादा कुछ नहीं।"4 शीलो का यह रूप जागरूक स्त्री का है। वह अपने हक को त्यागने को तैयार नहीं है। वह स्वयं अपनी खेती और जमीन की रखवाली करती है। उसमें कई तरह की फसलें उगाती है और अपने कमाए पैसों को बैंकों में खुद भी जमा करती है और दूसरों को भी उसकी सलाह देती है। शीलो आधुनिक विचारधारा वाली जाग्रत स्त्री का प्रतिरूप है। वह सभी स्त्रियों को अपने समान अपने अधिकारों के प्रति जागरूक करना चाहती है। जीवन मूल्यों को नये ढंग से जीना चाहती है।

'इदन्नमम्' की कथा विस्तृत है। इसमें नारी चेतना को व्यापक सामाजिक परिवेश में उभारा गया है। इनमें देश के स्वतंत्र होने के बाद का पूरा सामाजिक यथार्थ अपने अंतर्विरोधों के साथ विद्यमान है। सामंती संस्कारों में रचे-बसे परिवार, आर्थिक प्रलोभनों के चलते दरकते हुए पारिवारिक रिश्ते, भ्रष्ट राजनीति नौकरशाही का अमानवीय चरित्र नये नेता और शोषण के नये तरीके, वोट की राजनीति इनके सारे जीवन संदर्भों की सघनता उपन्यास को समृद्ध करती है। नारी पात्रों का शोषण यहां भी है, किंतु यहां वे अपेक्षाकृत सक्रिय हैं और अपने ढंग से पुरुष वर्चस्व को चुनौती देती है।"5 उपन्यास का केंद्रीय पात्र मंदा है। वह महेंदर सिंह की बेटी है। महेंदर स्वप्नदर्शी नेता थे। उनकी हत्या के बाद 'मंदा' उनके सपनों को साकार करने का व्रत लेती है। कच्ची उम्र में ही उसके साथ बलात्कार हुआ है, किंतु उसके मन में किसी प्रकार का अपराध बोध नहीं है। इस पर कुसुमा भाभी मंदा को सीख देती है कि, "जो हुआ उसे भूल जाना। डर मत मानना कभी जिंदगानी में, इतनी बड़ी जिंदगी में अच्छा-बुरा घट जाता है बिटिया, उसके कारण मन में गांठ लगाने से क्या फायदा ?"6 कुसुमा भाभी की बात समझ जाती है 'मंदा'। लेकिन कुसुमा भाभी सामंती समाज और पुरुष वर्चस्व से मंदा को बचा नहीं पाती। जिससे उसकी सगाई टूट जाती है। मंदा इन सभी बातों की सीख को अपनी शक्ति

बनाती है और महराज जैसे नैतिक, विवेकनिष्ठ और सर्वमान्य व्यक्ति से प्रेरणा लेती रहती है। शरीर सौंदर्य और विवेकहीन प्रतिशोध के दोनों अतिवादी रास्तों के बजाय मंदा सामूहिक संघर्ष और सामाजिक आंदोलनों की पगडंडी पर निकल पड़ती है। उसे व्यक्तिगत दुःखों से उबरने का यही विकल्प बेहतर लगता है। मान-सम्मान या अपमान की चिंताओं को छोड़, अपने होने और जीने को एक गहरा अर्थ देने की कोशिश में मंदा नारी चेतना को सामाजिक चेतना में विलीन कर देती है। औरत होने के साथ-साथ वंचित भी होना उसकी लड़ाई को दोहरा ही नहीं करता, रोज नये चक्रव्यूह को तोड़ने की चुनौती भी बनता है। गरीबी, बेकारी, जाति-पांति, सांप्रदायिकता, अशिक्षा, राजनीतिक लूट-खसोट, विकास की आड़ में विस्थापन, भ्रष्ट पुलिस तंत्र और अफसरशाही के चंगुल में फंसे ग्रामवासियों के बीच सम्मानपूर्वक जीने की राह बनाना - जुटाना या सामूहिक सहयोग संघर्ष के लिए जन-समर्थन तैयार करना निस्संदेह हिम्मत और हौसले का काम है, विशेषकर जब, ''लोग लड़ने मरने का साहस गंवा बैठे हैं, बस जीना चाहते हैं, किसी भी तरह।"7 वह सबमें लोकशक्ति जाग्रत करती है। वह मजदूरों को उनकी मेहनत का महत्व और मूल्य समझाती है और आगे बढ़कर अभिलाषा सिंह जैसे शक्तिशाली ठेकेदार को चुनौती देती है। नारी चेतना का यह प्रभाव पूरी तरह सफल रहा है। अब नारी शक्ति जाग उठी है। अब सामाजिक ढांचे को तोड़ती हुई न केवल वह अपने अधिकारों को सुरक्षित करती है, वरन् समाज को नयी दिशा में आगे भी बढ़ाती है।

मैत्रेयी पुष्पा ने अपने उपन्यास 'अल्मा कबूतरी' में समाज की विसंगतियां और कज्जा समाज की कबूतरी स्त्रियों के शोषण को चित्रित किया है। किस प्रकार कज्जा समाज कबूतरी स्त्रियों का जोर-जबरदस्ती से शोषण करते हैं। उन्हें भोग्य के रूप में देखते हैं और उनका इस्तेमाल कर गंदी-गंदी गालियां देते हैं। उनको हवस का शिकार बनाते फिर लात मारकर हटा देते हैं। कबूतरी स्त्री भी इनकी भूख का शिकार होने से नहीं बच पाती। पिता की मृत्यु के बाद उसे जानवरों से भी बदतर जीवन जीना पड़ा। 'अल्मा' समाज की अमानवीय विषमताओं का शिकार बनी। राजनेता अपनी प्रतिष्ठा के लिए उसे इस्तेमाल करना चाहते हैं। शारीरिक, मानसिक अत्याचार, मानसिक उत्पीड़न तथा तरह-तरह के शोषण का शिकार हुई अल्मा अपने मन-मस्तिष्क को कटु बना लेती है। शोषण तथा समस्याओं से जूझती हुई अंत में प्रदेश के समाज कल्याण मंत्री श्रीराम शास्त्री से विवाह कर उसका बायां हाथ बन जाती है। श्रीराम शास्त्री की हत्या होने पर अल्मा स्वयं पति को मुखाग्नि देती है। जिसे देखकर समाज, पंडित, जमा हुई जनता अवाक रह जाती है। उसे कई उपाधियों से नवाजा जाता है। "श्रीराम शास्त्री के निधन के कारण खाली हुई बवीना विधानसभा सीट के लिए सत्तारूढ़ पार्टी की ओर से श्रीराम शास्त्री की निकटतम सहयोगी और निष्ठावान गाइड अल्मा उम्मीदवार बन जाती है।"8 अल्मा रथ में बैठी अपने इच्छा मार्ग पर जा रही है। सोच रही है मेरे भीतर आन कएक नन्हा पंछी फड़फड़ाया करता है। कितनी बार पंख कटे, कितनी बार घायल हुआ, वह मरता नहीं। फिर-फिर फड़फड़ाता है। और उठने की कोशिश करता है। ऊंचे से ऊंचा उड़ने की। यह डरता भी नहीं।"9 अल्मा सामान्य से ऊंचाई तक पहुंचने का प्रयास करती दृष्टिगोचर होती है। वह इस दशक की स्त्री समस्याओं से डरकर आत्मदाह नहीं करती है, बल्कि उन परिस्थितियों का सामना कर जीती

है। वह सामाजिक, पारिवारिक बिरादरी के शोषण, अन्याय, अत्याचार के खिलाफ विद्रोह कर देती है। 'अल्मा' समाज की विसंगतियों का शिकार होकर भी बेटे के भावी जीवन की मनोकामना करती हुई एक विद्रोही स्त्री होने का समाज में मुकाम हासिल करती है। सामाजिक जड़ता को तोड़ती और पारंपरिक रूढ़ियों को चुनौती देती हुई अल्मा जैसी दलित नारी की अपराजेय जीजिविषा समकालीन नारी चेतान को शक्ति और प्रेरणा देने वाली है।

'अगरपाखी' और 'विजन' भी स्त्री संघर्ष की गाथा व्यक्त करते हैं। 'अगरपाखी' उनके पूर्व प्रकाशित छोटे से उपन्यास 'स्मृतिदंश' का विस्तार प्रतीत होता है। किंतु इसका कथ्य सर्वथा नया है। इसमें भी मैत्रेयी ने बुंदेलखंड के ग्रामीण जीवन के अंतर्विरोध को उजागर किया है। डॉ.नामवर सिंह के अनुसार, "यह एक साथ स्त्री-विमर्श, संपत्ति विमर्श और सती विमर्श तीनों का उपन्यास है। यह कथा इस तथ्य की पुष्टि करती है कि आजादी के बाद जमींदारी प्रथा समाप्त होने के बावजूद सामंती व्यवस्था अब भी गांवों में जमीन के अंदर काफी गहरे धंसी हुई है। इससे सबसे ज्यादा नुकसान स्त्रियों को हुआ। सामंती व्यवस्था में स्त्री का दायरा घर के भीतर तय किया है। वह देवी होती है या कुलटा।

इस उपन्यास में भुवन, मोहिनी नामक स्त्री की कथा आई है, जिसकी शादी एक अधपगले व्यक्ति से कर दी जाती है। उसकी बहन का बेटा उससे प्यार करता है, परंतु उसमें इतना नैतिक साहस नहीं है कि वह अपनी मौसी का हाथ पकड़कर अपने प्यार का इजहार कर सके। चंदर और भुवन के संबंध के साथ-साथ हमारे सामने आती है। दोनों के बीच शारीरिक आकर्षण भी होता है और संपर्क भी। इस रहस्य को जानने के बाद सभी स्त्रियां थर्रा उठती है। जिससे भुवन आत्महत्या करने को तैयार हो जाती है। चंदर भाग जाता है और भुवन आत्मसमर्पण कर देती है। पर इसकी परिणति जिस रूप में होती है, वह भुवन की जिंदगी नरक बना देती है। उसकी शादी पागल व्यक्ति से कर देते हैं। भुवन मोहिनी की सारी उमंग, सारा ऐश्वर्य क्षणभर में धराशायी हो जाता है। उसे कसने, बांधनी और बेड़ियां लगाने के प्रयत्न किए जाने लगे। जब उसने विरोध जताया तो उसे बदनाम करने और मारने की कोशिश की गई। लेकिन भुवन किसी के सामने झुकी नहीं। वह अज्ञातवास में चली गई और मौका मिलने पर कोर्ट में अर्जी देती है। कुंवर अजय सिंह अपने मकसद में सफल नहीं हो पाता। नारी की शक्ति और तेज के समक्ष पुरुष टिक नहीं सकता। कहानी में यह संदेश स्पष्ट है कि स्त्री जाग उठी है और संघर्ष कर रही है। पुरुष समाज उसे अपने नागपाश में कसने का प्रयत्न करता है, कभी भय से, कभी धमकी से, कभी 'इमोशनल ब्लैकमेल' से, परंतु स्त्री अब इन चक्करों को समझ चुकी है। वह 'एडजस्ट' करना जानती है, लेकिन कोने में धकेले जाने पर पलटकर वार करना भी सीख गई है। अपनी बात कहने और अपना हक मांगने का साहस उसमें आ गया है, यही कहना इस उपन्यास का मंतव्य और प्रतिपाद्य है। मैत्रेयी पुष्पा के उपन्यास 'विजन' में नारी संघर्ष को अभिव्यिक्ति मिली है। इसमें भी वह अपने अस्तित्व की तलाश करती दिखाई देती है। 'विजन' में दो महिला डॉक्टर हैं, उनका शहरी परिवेश है, किंतु कथा वही नारी संघर्ष और अपने अस्तित्व की तलाश है। मैत्रेयी की खूबी यह है कि उनके स्त्री पात्र केवल लड़ने के लिए अपने विरोधियों से नहीं लड़ते। इसके पीछे एक मकसद होता है। यह मकसद स्त्री

द्वारा खुद अपनी अस्मिता की तलाश और समाज में अपनी उपस्थिति दर्ज कराना है। 'विजन' उपन्यास में कथा डॉक्टरों के इर्द-गिर्द घूमती है। इसमें स्त्री और पुरुष डाक्टरों के संबंधों को भी उजागर किया है। एक पेशे में कार्यरत पुरुष अपने महिला सहकर्मियों के प्रति क्या और कैसा रवैया रखता है, उपन्यास में इस पक्ष को मार्मिक, तल्ख और सूक्ष्म रूप में प्रस्तुत करता है। इस कथा के दो प्रमुख पात्र है - डा.नेहा और डा.आभा। दोनों ही कुशल, मेधावी और संभावनाओं से भरपूर डाक्टर हैं। पुरुष डाक्टर इन दोनों ही महिला डाक्टरों के कॅरियर को तबाह करने पर आमादा है। कहीं प्यार, स्नेह और उत्तरदायित्व के रूप में तो कहीं षड्यंत्र की शक्ल में। यहां नेहा की अपेक्षा आभा निडर, साहसी है। आभा डाक्टर है और उसका पति भी डाक्टर है। डाक्टर होने के बावजूद उसका पति आभा से चाहता है कि उसे मां-बाप की सेवा करनी चाहिए। उनके साथ रहना चाहिए। आभा इसे अन्याय मानती है। शादी करने वक्त वह यह जानता था कि वह एक डाॅक्टर से शादी करने जा रहा है, किसी कम पढ़ी-लिखी स्त्री से नहीं, जिसका एकमात्र काम मां-बाप की सेवा करना होता है। इस जोड़ी में पति निम्न मध्यवर्गीय परिवार का है और पत्नी आई.ए.एस. आफिसर की बेटी है। आभा स्वभाव में एरोगेंट है। वह नेहा की तरह विनम्र और दब्बू नहीं है। पर उसका पक्ष अपनी जगह बिलकुल ठीक है। पति के साथ मारपीट होने के बाद वह तलाक लेने का निर्णय लेती है। और अपने विवाह बंधन को निर्मम होकर तोड़ डालती है। अपने मां-बाप को वह 'तनावमुक्त' करती है और अपना बसेरा खुद बनाती है। इस प्रकार समाज से लड़ने के लिए वह खुद को पूरी तरह से तैयार कर लेती है, अन्याय के विरुद्ध संघर्ष करने के प्रयास में उसे अपनी नौकरी से हाथ धोना पड़ता है, पर वह झुकती नहीं है और दृढ़तापूर्वक थपेड़ों का मुकाबला करती हुई जीत हासिल करती है।

निष्कर्ष

मैत्रेयी पुष्पा के उपन्यासों पर विचार करें तो उनके उपन्यास अंचल विशेष के रंग में रंगे होने पर भी आंचलिक नहीं है। उनमें गांव का मनुष्य अकेला नहीं उसके साथ प्रकृति है। पारंपरिक संस्कार हैं। लोक-देवता है, जातीय स्मृतियां हैं और पूरी लोक-संस्कृति है। उनके नारी पात्र अधिक सक्रिय, सजग और प्रभावी हैं। उनकी नारी चेतना मूक विद्रोह से चलकर मुखर सामूहिक संघर्ष की दिशा में अग्रसर हुई है। और सबसे बड़ी बात यह है कि उनमें सच कहने का साहस है और उनकी क्रांति चेतना किसी विचारधारा के दायरे में कैद न होकर अनुभव की आंच और अनुभूति के ताप से प्रेरित है। निश्चय ही नारी जागृति की वह हकदार है।

संदर्भ ग्रंथ

1 बीसवीं शताब्दी के अंतिम दशक के हिंदी उपन्यासों में जीवन दृष्टि, डा.रुपिंद्र शर्मा, के.के.पब्लिकेशन, 4806/24, भरतराम मंदिर, दरियागंज, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण 2015, पृष्ठ 99

2 हिन्दी कथा साहित्य (आठवें दशक के बाद), डा.राहुल मिश्रा, ग्रन्थ निकेतन प्रकाशन, 10296 गली नं.1, नवदुर्गा मंदिर के पास, गोरखपार्क, नवीन शाहदरा, दिल्ली, पृष्ठ 187

3 समकालीन हिन्दी उपन्यासों में स्त्री विमर्श, डॉ..स्नेहलता, राज पब्लिकेशन, 108, 4855/24 अंसारी रोड, दरियागंज, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण 2012, पृष्ठ 359

4 वही, पृष्ठ 359

5 हिन्दी उपन्यास, डा.रामचंद्र तिवारी, विश्वविद्यालय प्रकाशन, चैक, वाराणसी, प्रथम संस्करण 2006, पृष्ठ 192

6 औरत, अस्तित्व और अस्मिता, अरविंद जैन, राजकमल प्रकाशन प्रा.लि., बी.नेताजी सुभाष मार्ग, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण 2001, पृष्ठ 105

7 वही, पृष्ठ 107

8 समकालीन हिन्दी उपन्यासों में स्त्री विमर्श, डा.स्नेहलता, पृष्ठ 307

9 वही, पृष्ठ 307

10 हिन्दी उपन्यास, डा.रामचंद्र तिवारी, पृष्ठ 195